उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय छः

अर्थ की खोज करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. मार्गदर्शक.....1

क. लेखक 3

ख. दस्तावेज 5

ग. श्रोतागण 6

घ. परस्पर-निर्भरता 9

III. सार.....11

क. प्रसंग की जटिलता 12

ख. व्याख्याकार की विशिष्टता 15

ग. श्रोताओं की आवश्यकताएँ 16

IV. सारांश 18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय छः

अर्थ की खोज करना

परिचय

बच्चे अक्सर इस बात की सराहना नहीं करते हैं कि उनके माता पिता उनके लिए कितना कुछ करते हैं। उनके शिक्षक उन्हें सभी तरह की नई खोजों की जानकारी देने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। परन्तु अक्सर, वो अपने प्रत्येक कदम पर शिकायत और बड़बड़ाने की अपेक्षा इनसे कुछ ज्यादा ही करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, वयस्क होने के नाते जब हम अपने बचपन के समय के शिक्षकों की ओर देखते हैं, तो हम समझ जाते हैं कि यह कितना अच्छा था कि हमें अपने पाठों को स्वयं सीखने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। जो कुछ उन्होंने आपके लिए किया है, उसके लिए आप आभारी हो जाते हैं, परन्तु जब हम इन बातों के बारे में सोचते हैं,तो हमें बचपन के उन पाठों को सीखने के द्वारा मिले उन असँख्य अवसरों के लिए हमारे जीवनों के प्रत्येक दिन और भी अधिक आभारी होते जाना चाहिए। कई अर्थों में, कुछ इसी तरह से जब बात पवित्रशास्त्र के अर्थ की आती है, तो होता है। परमेश्वर ने हमें स्वयं के ऊपर पवित्रशास्त्र के अर्थ की खोज करने के लिए छोड़ नहीं दिया है। उसने हमें सहायता के लिए मार्गदर्शकों को प्रदान किया है। परन्तु इससे भी ज्यादा, जब हम अपने जीवन को यापन करते हैं तो बाइबल की सबसे ज्यादा उल्लेखनीय वस्तुओं में से एक यह है कि, हम बाइबल की ओर बारी बारी मुड़ कर आ सकते हैं और सदैव इसके अर्थों के बारे में सीख सकते हैं।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* पर हमारी श्रृंखला का छठवाँ अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "अर्थ की खोज करना" दिया है। इस अध्याय में, हम हमारे ध्यान को व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान की कुछ रणनीतियों के ऊपर केन्द्रित करेंगे जो पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ का पता लगाने में हमारी सहायता कर सकती है।

बाइबल के अर्थ का पता लगाने की प्रक्रिया में असँख्य कारकों का योगदान है। परन्तु हमारे प्रयोजनों के लिए, हम अपने ध्यान को केवल दो पर ही केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले हम कुछ ऐसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शकों के बारे में बात करेंगे जो हमारी सहायता बाइबल आधारित मूलपाठ के महत्व को प्रकाशित करने में करेंगे। और दूसरा, हम उस अर्थ के कई सार बनाने के मूल्य को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम उन मार्गदर्शकों को देखें जो कि हमारे ध्यान को पवित्रशास्त्र के अर्थ की ओर लगाते हैं।

मार्गदर्शक

पिछले किसी एक अध्याय में, हमने यह उल्लेख किया था कि बहुत से इवैन्जेलिकल्स अर्थात् सुसमाचारवादी आज के समय में उनके सामान्य व्याख्याशास्त्रीय रणनीति को व्याकरणीय-ऐतिहासिक पद्धति के रूप में उल्लेख करते हैं। अब यह शब्दावली अपेक्षाकृत हाल के समय की ही है, परन्तु यह उस एक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है जिसका पता पूरे कलीसियाई इतिहास के अतीत में जा कर लगाया जा सकता है, विशेषकर धर्मसुधार के समय में। वस्तुतः व्याकरणीय-ऐतिहासिक पद्धति पवित्रशास्त्र के अर्थ को पवित्रशास्त्र के व्याकरण की शब्दावली में खोजने की कोशिश करता है – अर्थात् उसके पृष्ठों के ऊपर क्या लिखा हुआ है – और इसके प्राचीन इतिहास के संदर्भ की शब्दावली में, विशेषकर इसके मानवीय लेखकों और श्रोताओं के संदर्भ में। यह व्याकरणीय और ऐतिहासिक कारक पवित्रशास्त्र के अर्थ को खोजने के लिए मार्गदर्शकों के रूप में कार्य करते हैं।

इस अध्याय में, हम हमारे ध्यान को तीन मुख्य मार्गदर्शकों की ओर केन्द्रित करेंगे जो पवित्रशास्त्र के मूलपाठ के महत्व को प्रकाशित करने में हमारी सहायता करेंगे: मूलपाठ के लेखक, स्वयं दस्तावेज और मूल श्रोता जिनके लिए मूलपाठ लिखा गया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जब पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के लेखों को लिखने के लिए प्रेरणा दी, तो उसने लेखकों की प्रतिभाओं और व्यक्तित्वों के माध्यम से कार्य किया। इसलिए, लेखक के बारे में कुछ जानकारी होना उन बातों को समझने में सहायता कर सकता है, जिन्हें उन्होंने लिखा।

पवित्र आत्मा ने प्रत्येक पुस्तक को एक एकीकृत पुस्तक के रूप में प्रत्येक प्रसंग के लिए पर्याप्त लेखन विषय को उपलब्ध कराते हुए इसे इसके स्वयं के व्याकरणीय और साहित्यिक संदर्भ में रचा। इसलिए, दस्तावेज स्वयं उसकी व्याख्या का मार्गदर्शन कर सकते हैं, क्योंकि इसमें साहित्यिक संदर्भ मिलता है, जिसमें इसके सारे प्रसंगों की व्याख्या की जानी चाहिए।

और आत्मा ने यह सुनिश्चित किया कि जिन पुस्तकों को उसने प्रेरित किया था वे उसके मूल श्रोताओं के लिए भावार्थ और उसके जीवन से प्रासंगिक होंगे। इसलिए, हम पवित्रशास्त्र के अर्थ के बारे में भी उसके मूल पाठकों की पहचान और जीवन की खोज करते हुए सीख सकते हैं।

कल्पना करें कि एक व्यक्ति एक रेस्तरां में एक लिखे हुए कागज के टुकड़े को इसके फर्श पर पड़ा हुआ पाता है। उस कागज के टुकड़े पर केवल एक ही शब्द लिखा हुआ है अर्थात्: **"सहायता**!" वह उस कागज के टुकड़े को अपने मित्र को उसकी मेज पर दिखाता है कि वह इसे देख कर पता लगाए कि कौन व्यक्ति इसके बारे में पता लगा सकता है कि इसका क्या अर्थ है। परन्तु इसके ऊपर ज्यादा कार्य नहीं किया जा सकता है। "मैं सोचता हूँ इसमें और ज्यादा शब्द दिए गए होते," वह व्यक्ति उत्तर देता है। "यदि हम मात्र यह जान जाएँ कि इसे किसने लिखा है," दूसरा इसमें इस बात को जोड़ता है। और एक अन्य मित्र ऐसी शिकायत करता है कि, "मैं सोचता हूँ कि इसमें और ज्यादा शब्द लिखे हुए होते।" अन्य यह कहता है कि, "मैं सोचता हूँ कि यह कितना अच्छा होता कि हम यह जानते कि इसे किसने लिखा है। और अन्य मित्र अपनी टिप्पणी देता है कि, "मैं सोचता हूँ कि कोई ऐसा तरीका होता जिससे हम यह जान जाते कि इस कागज के टुकड़े को किसे मिलना चाहिए था।" सच्चाई तो यह है कि कागज के उस टुकड़े के कई अर्थ निकल सकते हैं। यह खेलने वाले बच्चों का हिस्सा हो सकता था जो कि अन्य किसी मेज के ऊपर बैठे हुए खेल रहे थे। यह रेस्तरां में भोजन सम्बन्धी सूची से किसी चीज के लिए अनुरोध के लिए सहायता हो सकती थी। यह किसी की ओर से गंभीर संकट में पड़े होने के लिए सहायता के लिए पुकार हो सकती है। बिना किसी आगे के मार्गदर्शन के, उस व्यक्ति और उसके मित्रों के लिए यह समझना कठिन हो गया कि उस कागज के टुकड़े पर लिखे हुए का वास्तव में क्या अर्थ था।

और कुछ ऐसा ही सत्य बाइबल के बारे में है। जब हम लेखकों और श्रोताओं के बारे मे थोड़ा या कुछ भी नहीं जानते हैं, या जब हम प्रसंग को इसके व्यापक संदर्भ में जाने बिना पढ़ते हैं, तो बाइबल में दी गई मंशा का अर्थ हमारे लिए अस्पष्ट होगा। परन्तु शुभ सन्देश यह है कि लेखक, दस्तावेज या श्रोताओं के बारे में जिस भी ज्ञान को हम प्राप्त करते हैं उसमें पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी समझ को उन्नत करने की क्षमता है।

> **यदि हम पवित्रशास्त्र के उस प्रसंग जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, के व्याकरणीय और ऐतिहासिक संदर्भ का ध्यान न रखें, तो हम न चाहते हुए भी उन्हें अपने वास्तविक पूर्वानुमानों के आलोक में ही पढ़ेंगे। उदाहरण के लिए, और यह कुछ लोगों के लिए बेतुका लग सकता है, परन्तु जब यीशु नए जन्म के बारे में बोलता है, या ऊपर से जन्म प्राप्त किए जाने के बारे, तो यहाँ पर ऐसे लोग हैं जो इसे पुनर्जन्म के रूप में पढ़ते हैं – पुन: जन्म प्राप्त किया जाना, शाब्दिक रूप से जन्म लेना, एक ऐसा जन्म जिसे आप जानते हैं, अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करने की अपेक्षा किसी अन्य के गर्भ में प्रवेश करके दूसरी बार जन्म लेना। जो कि इस प्रसंग में नीकुदेमुस की गलत समझ थी। इसलिए हमें इसके व्याकरणीय भावार्थ, साहित्यिक संदर्भ को समझने की आवश्यकता है। और इस घटना में, कुछ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी हमारी सहायता करेगी। उदाहरण के लिए, यहूदी लोग जब पुन: जन्म लिए जाने के बारे में बात करते हैं, तो वे इसे विशेषकर इस शब्दावली में समझेंगे जब एक अन्यजाति यहूदी धर्म में परिवर्तित होता है। परन्तु यह कुछ ऐसी बात है जो कि इस्राएल के शिक्षक के लिए भावार्थ को उत्पन्न करेगा। उसके साथ ऐसा व्यवहार कैसे किया जा सकता है कि मानो वह भी उस व्यक्ति की समानता में हो जो कि परमेश्वर के लोगों का यहाँ तक कि अंश**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

भी नहीं है? परन्तु यहां कुछ ऐसा है जिसे यीशु बाद में कहता है, जब वह यहून्ना 8 के व्यापक संदर्भ में जाता है, वह कहता है कि लोग उस समय तक इबलीस की सन्तान है जब तक वे परमेश्वर की सन्तान नहीं बन जाते हैं, इसलिए एक व्यक्ति को आत्मिक रूप से नया जन्म प्राप्त होना आवश्यक है। और आप बाइबल के पूरे उदाहरणों के द्वारा सँख्या में बढ़ सकते हैं तो, एक बार फिर से, पवित्रशास्त्र की प्रत्येक बात का सांस्कृतिक संदर्भ और एक व्याकरणीय संदर्भ होता है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र सभी समयों के लिए लिखा हुआ है, परन्तु हमें परिस्थितियों, अर्थात् जिन संदर्भों को सम्बोधित किया हुआ है, उन्हें स्वीकार करने की भी आवश्यकता है, ताकि हम उन सिद्धान्तों, सार्वभौमिक और शाश्वत सिद्धान्तों को पहचान सकें जिन्हें हम अन्य संदर्भों के ऊपर भी लागू कर सकें।

- डॉ क्रेग एस. किन्नर

हम विश्वास करते हैं कि व्याकरणीय या ऐतिहासिक संदर्भ का ज्यादा से ज्यादा ज्ञान बाइबल के पठन् से अधिक लाभ को प्राप्त करने में एक व्यक्ति की बहुत ज्यादा सहायता करेगा। अब इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, आप बाइबल का पठन् अपनी थोड़ी सी शिक्षा के साथ कर सकते हैं, बाइबल के मूलपाठ को छोड़ किसी अतिरिक्त औजारों की सहायता के बिना और यह मसीहियों का सदियों से दृढ़ विश्वास रहा है कि आप बाइबल के मूलपाठ को आज के आधुनिक युग में हमारे लिए उपलब्ध अतिरिक्त बाइबल अध्ययन सामग्री अर्थात् औजारों और संसाधनों के बिना भी समझ सकते हैं। परन्तु इस पर भी, वह समझ जिसमें कोई एक गंद्याश या वाक्य एकीकृत किया हुआ है और उस संदर्भ की समझ जिसमें वह प्रसंग लिखा हुआ है बहुत अधिक व्यापक रूप से पाठकों के लिए अधिक से अधिक समझ और अधिक से अधिक स्पष्टता को लेकर आएगा।

- डॉ शिमौन विबर्ट

मार्गदर्शकों के ऊपर हमारा विचार विमर्श जो कि बाइबल के एक मूलपाठ के महत्व को प्रकाशित करने में हमारी सहायता करता है, को हम चार भागों में विभाजित करेंगे। हम प्रत्येक मार्गदर्शक को अधिक निकटता से देखना आरम्भ करेंगे: अर्थात् लेखक, दस्तावेज, और श्रोतागण। और इस भाग का निष्कर्ष हम उनकी परस्पर-निर्भरता की खोज करते हुए करेंगे। आइए सबसे पहले हम लेखक के द्वारा प्रस्तुत किए हुए मार्गदर्शन के ऊपर देखें।

लेखक

जब भी हम पवित्रशास्त्र के एक अंश के मानवीय लेखक के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो हमें सभी तरह के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। सबसे पहले, हम लेखक की पहचान के बारे में जानना चाहते हैं। वह कौन था? कई बार, पवित्रशास्त्र वास्तव में लेखक को विभिन्न पुस्तकों के नामों से पहचान लेता है। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की पुस्तकें आमोस और यशायाह सीधे ही भविष्यद्वक्ता आमोस और यशायाह के लिए सम्बोधित की गई हैं। पतरस और पौलुस रचित नए नियम की पत्रियाँ स्पष्ट तौर पर इन प्रेरितों को उनके लेखक होने के बारे में बतलाती हैं। परन्तु उसी समय, पुराने और नए नियम की बहुत सी पुस्तकें, जैसे न्यायियों और राजाओं की पुस्तकें, साथ ही प्रेरितों के काम और इब्रानियों के लेखक अपरिचित हैं। इन घटनाओं में, हमें अक्सर रचनाकार के बारे में कुछ सामान्य टिप्पणियों के साथ समझौता करना होगा। परन्तु चाहे कुछ भी क्यों न हो, कुछ सीमा तक या फिर अन्य सीमा में, सामान्य ऐतिहासिक अनुसन्धान और पवित्रशास्त्र स्वयं हमें इस योग्य बनाते हैं कि हम बाइबल की प्रत्येक पुस्तक के रचनाकार की रूपरेखा बना लें। हम सदैव ऐसे प्रश्नों से कुछ अन्तर्दृष्टियों को प्राप्त कर सकते हैं जैसे: लेखक की परमेश्वर के लोगों के बीच में क्या भूमिका रही? उसकी विशेष रूचियाँ क्या थीं? अपनी पुस्तक में वह कैसी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के ऊपर जोर देता है? और बाइबल की पुस्तक के रचनाकार के बारे में जो कुछ हम जानते हैं वह हमारा मार्गदर्शन पवित्रशास्त्र के अर्थ की खोज करने के हमारे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आइए यूहन्ना 3:16 के लेखक के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए लेखक के बारे में हमारे ज्ञान के प्रभाव को जो हमारे व्याख्यात्मक प्रयासों के ऊपर पड़नी चाहिए पर ध्यान दें। इस जानी पहचानी आयत में हम ऐसा पढ़ते हैं कि:

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)।

यूहन्ना का सुसमाचार प्रेरित यूहन्ना के द्वारा रचा गया है, जो कि याकूब का भाई और जब्दी का पुत्र था। वह यीशु के सबसे भरोसेमंद साथियों में से एक था और आरम्भिक मसीही समाज में विश्वास का एक स्तम्भ था। यूहन्ना के सुसमाचार के अलावा, उसने चार अतिरिक्त पुस्तकों को भी नए नियम में लिखा है: 1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना, 3 यूहन्ना और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

अपनी सभी पुस्तकों में, और जिन बातों को यूहन्ना के बारे में बाइबल के अन्य लेखकों के द्वारा कहा गया, जैसे कि मत्ती, मरकुस और लूका, हम यूहन्ना की मान्यताओं और जिस तरीके से उसने उन मान्यताओं को उसके श्रोताओं को सम्प्रेषित किया, से उपयोगी समझ को प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 20:31 में, यूहन्ना ने इसके सुसमाचार को लिखने के अभिप्राय को लिखा है। उसने अपने श्रोताओं को ऐसा कहा है कि:

परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:31)।

यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि यूहन्ना का व्यापक अभिप्राय उसके पाठकों को यह बुलाहट देना था कि वे "विश्वास करें, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और [वे] विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाएँ।"

जब हमें लेखक और उसके अभिप्राय के बारे में कुछ ज्ञान होता है, तो यूहन्ना 3:16 में इस द्विभागी अभिप्राय को देखना कठिन नहीं है।

आधुनिक अनुवादों के अधिकांश सम्पादक अपना ध्यान यूहन्ना 3:16 पर यूहन्ना की यीशु के शब्दों के बारे में दी गई टिप्पणियों पर आरम्भ करते हुए केन्द्रित करते हैं जो कि यूहन्ना 3:15 में अन्त होती हैं। यूहन्ना 3:16 का पहला आधा हिस्सा यह कहता है कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" इस आयत का यह हिस्सा यूहन्ना 20:31 के पहले आधे हिस्से के साथ मेल खाता है: "तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है" और यूहन्ना 3:16 का दूसरा आधा हिस्सा यह कहता है कि, "जो कोई उसमें विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन प्राप्त करे।" आयत का यह हिस्सा यूहन्ना 20:31 के दूसरे आधे हिस्से से मेल खाता है: "और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।"

ये समानतायें ऐसा कुछ भी प्रमाणित नहीं करती हैं जिन्हें सदियों से व्याख्याकारों ने न पहचाना हो। यूहन्ना की इस प्रसंग के लिए अपनी मंशा को केवल एक तथ्यात्मक, ऐतिहासिक वाक्यांश के रूप में प्रस्तुत करना थी। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई कि परमेश्वर ने उसके अद्वितीय पुत्र को दे दिया जो कि यूहन्ना के लिए अति महत्वपूर्ण थी, परन्तु इस बात को यहाँ उल्लेख करने में उसका वास्तविक उद्देश्य उसके श्रोताओं को मसीह में विश्वास करने से उद्धार पाने के लिए था ताकि वे अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। जैसा कि हम देखते हैं कि, यूहन्ना का उद्देश्य और मान्यताएँ, सुसमाचार को और अधिक उचित तरीके से व्याख्या करने में हमारी सहायता करती है।

पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए लेखक को मार्गदर्शक होने के नाते उसके ऊपर निर्भर रहने के लाभों पर ध्यान दे लेने के बाद, आइए हम अपने ध्यान को बाइबल आधारित दस्तावेजों की ओर केन्द्रित करें।

दस्तावेज

दस्तावेज शब्द के लिए हमारे उपयोग में मूलपाठ जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं के वे सभी गुण सम्मिलित हैं, जैसे शब्दावली, व्याकरण, वाक्य संरचना, औपचारिक संरचना, इसके संवाद की रूपरेखा, इसके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आस पास का साहित्यिक संदर्भ, और ऐसी ही अतिरिक्त बातें। उत्तरदायीपूर्ण तरीके से पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए, हमें प्रेरित लेखक द्वारा लिखे हुए वास्तविक शब्दों और वाक्यांशों पर निकटता से ध्यान देना चाहिए।

जब हम बाइबल आधारित दस्तावेज की खोज करते हैं तो स्मरण रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विभिन्न आकारों की इकाईयों में अपने अर्थ को संचारित करता है। अब, अर्थ के लिए ये विभिन्न इकाईयाँ अपनी विभिन्न शैली के अनुसार विभिन्न होती हैं, परन्तु सामान्य शब्दों में, अर्थ रूपिम के द्वारा संचारित होता है जो कि शब्दों का सबसे छोटा रूप होता है जो मौखिक वाक्य में एकवचन और बहुवचन जैसे बातों की ओर संकेत करता है। अर्थ सदैव इन शब्दों, फिर वाक्यांशों, खण्ड, वाक्य, गद्य में पैराग्राफ, और कविताओं में पद्य के माध्यम से अवगत किया जाता है। पूरी कथा के विस्तृत हिस्से, भाषण या व्यवस्था के आदेश और यहाँ तक कि पूरी की पूरी पुस्तकें अर्थ के लिए एक एकीकृत इकाई के रूप में कार्य करती हैं। और सबसे ज्यादा दिलचस्प बात यह है कि, छोटी इकाईयों का अर्थ बड़ी इकाईयों के आलोक में बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। और बड़ी इकाईयों का अर्थ छोटी इकाईयों के आलोक में बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है । इसलिए, जब भी हम बाइबल आधारित किसी भी दस्तावेज को इसके अर्थ की ओर हमारे मार्गदर्शन के लिए देखना चाहते हैं , तो हमें उस समय इसके इन स्तरों की खोज करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जो कुछ हमने कहा उसको प्रगट करने के लिए, आइए यूहन्ना 3:16 के एक पहलू को देखें जिसे अक्सर गलत समझा गया है।

जैसा कि हमने पहले कहा था कि, यूहन्ना 3:16 ऐसे आरम्भ होता है कि, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया..." यह इवैन्जेलिकल विश्वासियों के लिए सामान्य बात है कि वे इस वाक्यांश के अर्थ को कुछ इस तरह से लेते हैं; " क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना ज्यादा प्रेम किया...," "परमेश्वर ने जगत से बहुत ज्यादा प्रेम किया..." या "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से सबसे ज्यादा प्रेम किया..." यूहन्ना 3:16 के आरम्भ की यह समझ बहुत लम्बे समय से और व्यापक रूप से प्रचलित है कि हममें से बहुत सारे यहाँ तक कि कोई प्रश्न ही नहीं करते हैं कि यूहन्ना के इस शब्द "इतना" का क्या अर्थ है, और इसका अर्थ क्या ऐसे अर्थात् "इतना ज्यादा," "बहुत ज्यादा," "सबसे ज्यादा," में निकाला जाना चाहिए। परन्तु जब हम यूहन्ना 3:16 को उसके व्यापक संदर्भ में देखते हैं, तो शीघ्र ही यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शब्द "इतना" का ऐसा कोई महत्व नहीं है।

शब्द "इतना" का अनुवाद यूनानी शब्द *हाऊटोस* से किया गया है। यूनानी व्याकरण में इस क्रिया विशेषण ने कभी कभी "इतना ज्यादा" या "बहुत ज्यादा," सबसे के भावार्थ का संकेत दिया है, परन्तु ज्यादातर इसे "इस प्रकार" या "इस तरह" या "इस तरीके से" के अर्थ में उपयोग किया गया है। यूहन्ना 3:16 में इस शब्द "इतना" का उपयोग आयत 16 को उन आयतों से जो इससे ठीक पहले आई हैं, से तुलना करके इसके उपयोग का पता लगाया जा सकता है। यूहन्ना 3:14-15 कहती हैं कि:

> **और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:14-15)।**

इन आयतों में यीशु उस समय जब "मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया" की तुलना "मनुष्य का पुत्र" – अर्थात् यीशु – "के भी ऊँचे पर चढ़ाया जाने" के समय से करके की है।

आयत 15 में, यीशु गिनती 21:4-9 को उद्धृत करता है जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल को जंगल में जहरीले सर्पों को उनके ऊपर भेज कर दण्डित किया था। इस्राएली छुटकारे की मांग के लिए चिल्ला उठे थे। और परमेश्वर के आदेश पर, मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया था, उसको खम्भे पर ऊँचा हवा में उठाया था, और सभी इस्राएलियों ने उस पीतल के साँप को देखकर चंगाई को प्राप्त किया था। परन्तु इस रूपक के द्वारा, यीशु ने यह स्पष्ट किया कि वह भी इसी तरह से ऊँचे पर उठाया जाएगा, और प्रत्येक जो उसकी ओर देखेगा वह परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यहाँ पर ध्यान देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है जब यीशु ने ऐसा कहा है कि, "जैसे मूसा ने साँप को ऊपर उठाया...इसी तरह से मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना आवश्यक है।" इस तुलना में, जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "इतना" के लिए किया गया है वही आयत 16 के आरम्भ में प्रगट होता है जो कि शब्द *हाऊटोस* है। यीशु ने कहा कि जैसे साँप को ऊँचे पर उठाया गया था "उसी प्रकार" या "उसी तरह से," मनुष्य के पुत्र को भी ऊँचे पर उठाया जाना आवश्यक है। और यूहन्ना ने इस तुलना को उस समय उपयोग किया जब उसने इन्हीं शब्दों को आयत 16 में उपयोग किया।

वस्तुत: यूहन्ना ने शब्द *हाऊटोस* को दुहराया है, ताकि वह एक दूसरी तुलना को कर सके जो कि मूसा के द्वारा साँप को ऊँचे पर उठाए जाने की है। परन्तु आयत 16 में, जो कुछ मूसा ने किया और जो कुछ परमेश्वर ने किया अर्थात् जब उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया से तुलना की गई है। या हम इसे इस तरह से देख सकते हैं कि, *"और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया... उसी रीति से परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया [और] उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि जो कोई उसमें विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"* यह उदाहरण एक छोटे से तरीके को प्रगट करता है कि सावधानी से बाइबल आधारित मूलपाठ के दस्तावेज के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने से इसके अर्थ को समझने में हमें सहायता मिलती है।

इस समझ के साथ कि कैसे लेखक और दस्तावेज व्याख्या में हमारा मार्गदर्शक होकर हमारे लिए सहायक हो सकते हैं, अब हम एक तीसरे मार्गदर्शक के ऊपर ध्यान करने के लिए तैयार हैं, जो कि श्रोतागण हैं।

श्रोतागण

बाइबल की पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ जिसमें ये लिखी गई हैं, को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि बाइबल के साहित्य में एक उल्लेखनीय बात यह ध्यान देना है कि परमेश्वर उसके लोगों से विशेष समय में और विशेष लोगों के द्वारा, उनकी देखभाल और चिन्ता करते हुए, उनके चारों ओर के संसार के प्रति उनके डर और उनकी आशाओं को ध्यान में रखते हुए बोला। परमेश्वर ने उसने इस तरीके से बात कि जिसमें उसने स्वयं को उन पर प्रगट किया, और हमें उस सन्देश का हिस्सा होना है, और चाहे कुछ भी क्यों न हो, जैसा कि यह विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में मध्यस्थता किया हुआ है, उसी तरीके से स्वयं के लिए इसे प्राप्त करना है।

- डॉ स्कॉट रीड

जब कभी भी हम पवित्रशास्त्र के किसी एक हिस्से के मूल श्रोताओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो हमें सभी तरह के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। सबसे पहले, हम श्रोताओं की पहचान जानना चाहते हैं। वे कौन हैं? कई बार, पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट रूप से कहता है कि श्रोतागण कौन थे। उदाहरण के लिए, नए नियम में रोमियों की पत्री में श्रोतागण की पहचान रोम में रहने वाले मसीही विश्वासियों से की गई है। गलातियों में पहचान गलातियों की कलीसियाओं को इसके श्रोताओं के रूप में की गई है। परन्तु उसी समय, पुराने और नए नियम की बहुत सी पुस्तकें सीधे रूप से श्रोताओं की पहचान नहीं कराती हैं। और इन घटनाओं में, हमें कुछ अपरोक्ष सुरागों के साथ समझौता करना होगा। सभी घटनाओं में, कुछ कम या अधिक सीमा तक, सामान्य ऐतिहासिक अनुसन्धान और पवित्रशास्त्र स्वयं हमें मूल श्रोताओं की सामान्य रूपरेखा को निर्मित करने के लिए सक्षम बनाते हैं। हमें इस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अपना सब सम्भव प्रयास करना चाहिए: ये श्रोतागण कहाँ पर रहते थे? उनकी ऐतिहासिक परिस्तिथियाँ क्या थीं? उन्होंने किस तरह की चुनौतियों का सामना किया? उनकी किस तरह की वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक आवश्यकता रही होगीं? मूल श्रोताओं के बारे में जो कुछ हम जानते हैं वह हमें पवित्रशास्त्र के अर्थ की खोज करने के लिए मार्गदर्शन देता है।

यद्यपि मूल श्रोताओं ने सीधे तौर पर पवित्रशास्त्र की रचना में कुछ योगदान नहीं दिया, परन्तु बाइबल के लेखकों ने अक्सर उनकी पुस्तकों का संकलन उनके मूल और उनके बाद आने वाले श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए किया। उन्होंने कुछ लोगों को सीधे तौर पर लिखा, परन्तु उन्होंने अन्यों के लिए भी लिखा जो कि उनकी पुस्तकों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अपरोक्ष रूप से प्राप्त करेंगे। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जब पवित्रशास्त्र सबसे पहले लिखे गए तो साक्षरता केवल कुछ ही लोगों का विशेषाधिकार था। इस लिए, बाइबल के लेखकों ने यह अपेक्षा नहीं की कि बहुत सारे लोग उनकी पुस्तकों को वास्तव में उठा लेंगे और पढ़ेंगे। परन्तु फिर भी, जितना ज्यादा हम प्राथमिक और द्वितीय मूल श्रोताओं के बारे में जानेंगे, उतना ज्यादा अच्छे रूप में हम बाइबल आधारित प्रंसगों के मूल अर्थ की जाँच-पड़ताल करने के लिए सक्षम हो जाएंगे।

आइए एक बार पुन: यूहन्ना के सुसमाचार की ओर मूल श्रोताओं के महत्व को बाइबल की एक पुस्तक को ध्यान में रखते हुए मुड़ें। यूहन्ना के सुसमाचार की घटना में, हमें उन अपरोक्ष सुरागों के ऊपर निर्भर रहना होगा जो कि यूहन्ना के प्राथमिक और द्वितीय श्रोतागणों के बारे में हैं। क्योंकि एक बात यह है कि, यूहन्ना ने अक्सर पलस्तीन के रीति रिवाजों की व्याख्या की आवश्यकता को अनुभव किया है। सुनिए उसने यूहन्ना 4:9 में क्या सामरी स्त्री के साथ यीशु के वार्तालाप के सम्बन्ध में क्या लिखा है:

> **उस सामरी स्त्री ने उस [यीशु], से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते) (यूहन्ना 4:9)।**

यूहन्ना की टिप्पणी से ऐसा प्रकट होता है कि कम से कम उसके कुछ श्रोतागण यहूदी और सामरियों के बीच के अन्तर को नहीं जानते थे। इसलिए, यह विश्वास करना अत्यन्त कठिन है यूहन्ना ने मौलिक रूप से उन लोगों को लिखा जो कि पलस्तीन में रह रहे थे जहाँ पर यह प्रथा सभों को मालूम थी। सच्चाई तो यह है कि कम से कम यूहन्ना के कुछ श्रोतागण अन्यजाति पृष्ठभूमि से आए हुए थे क्योंकि दो बार - 1:41 और 4:25 में – वह इस बात की आवश्यकता का अनुभव करता है कि जो यह व्याख्या करता है कि यूनानी शब्द "ख्रिस्टोस" इब्रानी शब्द "मसीह" के सामान्तर है। एक और उदाहरण के लिए, सुनिए यूहन्ना 9:22 में यूहन्ना की दी हुई टिप्पणी को:

> **यहूदी एका कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए (यूहन्ना 9:22)।**

इस प्रसंग में, "आराधनालय से निकाला जाए का अर्थ यहूदी समाज में से जीवन भर के लिए बहिष्कृत, या बाहर अर्थात् हुक्का-पानी का बन्द कर दिए जाने से था।

हम न केवल यह अनुमान लगा सकते हैं कि यूहन्ना के श्रोताओं में अन्यजातियों से और पलस्तीन के बाहर से आए हुए लोग भी सम्मिलित थे, परन्तु साथ ही यह स्पष्ट जान पड़ता है कि उसके श्रोता एक महत्वपूर्ण चुनौती का भी सामना कर रहे थे। इस चुनौती के लिए एक सुराग इस सच्चाई में प्रकट होता है कि यूहन्ना ने शब्दावली "यहूदी" का उपयोग इस तरीके से किया है जो यह संकेत देता है कि ये वे लोग थे जो कि यीशु और उसके अनुयायियों का विरोध कर रहे थे। यह विषय अति महत्वपूर्ण है जिसके कारण कुछ व्याख्याकारों अर्थात् अनुवादकों ने यह तर्क दिया है कि यह सुसमाचार सामी (इब्रानी और अरबी भाषी लोग) अर्थात् मध्यपूर्व में रहने वाले लोगों का-विरोधी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, यूहन्ना और यीशु के बाकी के प्रेरित यहूदी धर्म से थे, इसलिए यह केवल इस नस्ल के लिए मात्र एक संदर्भ था। इसकी अपेक्षा, यूहन्ना के मन में यहूदी वे लोग थे जो यीशु में विश्वास नहीं करते थे और जिन्होंने कलीसिया को सताया था।

जिस आवृत्ति में यूहन्ना अविश्वासी यहूदियों की ओर यीशु और उसके अनुयायियों का विरोधी होने का संकेत करता है, वह शक्तिशाली रूप से यह सुझाव देता है कि यूहन्ना के श्रोता भी उनके विश्वास के कारण सताव का सामना कर रहे थे। और यूहन्ना का सुसमाचार अक्सर उन कारणों को सम्बोधित करता है कि अविश्वासी यहूदियों ने यीशु और मसीही विश्वास में आए हुए विश्वासियों का इन्कार कर दिया। हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, हम उनमें से केवलमात्र दो का उल्लेख करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

एक तरफ तो, अविश्वासी यहूदियों ने यीशु पर ईश-निन्दा का दोष लगाया क्योंकि उसने दावा किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र था। सुनिए जिस तरह से यीशु ने उसके यहूदी विरोधियों की यूहन्ना 10:36 में कैसे फटकारा:

तुम मुझ पर ईश-निन्दा का दोष क्यों लगाते हो क्योंकि मैं ने कहा, "मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ?" (यूहन्ना 10:36)।

जैसे कि यह आयत इंगित करती है, यीशु ने यह दावा किया कि वह परमेश्वर का पुत्र था, यही एक कारण था, जिससे यहूदियों ने उसको अस्वीकार कर दिया था।

दूसरी तरफ, यीशु के यहूदी विरोधी उसको पसन्द भी नहीं करते थे क्योंकि वह अन्यजातियों के साथ यहूदियों में भी मुक्ति की आशा को लेकर आया था। यूहन्ना उसके श्रोताओं को यह स्पष्ट करता है कि यीशु न केवल यहूदियों का मुक्तिदाता था परन्तु इस संसार के प्रत्येक समूह के लोगों का भी। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 4:42 में, हम सामरियों की प्रतिक्रिया को सामरी स्त्री की गवाही को सुनने के बाद पढ़ते हैं, जिसके साथ यीशु ने कुएँ पर मुलाकात की थी:

हम जानते हैं कि यह व्यक्ति सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है (यूहन्ना 4:42)।

यूहन्ना के दृष्टिकोण से, यीशु न केवल यहूदियों का उद्धारकर्ता था परन्तु इस "संसार का उद्धारकर्ता" भी था।

यूहन्ना के मूल श्रोताओं के लिए इन दो विषयों की महत्वपूर्णता यूहन्ना 3:16 जैसे प्रसंगों की व्याख्या करने में सहायता करती है जहाँ पर यूहन्ना ने यह जोर दिया है कि यीशु ही परमेश्वर का "एकलौता पुत्र" है और यह कि पिता ने उसके इसलिए भेजा क्योंकि "परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया।"

बाइबल में दी गई प्रत्येक पुस्तक को किसी न किसी मूल श्रोता के लिए लिखा गया था, और हम आज इक्कीसवीं सदी के लोग इसके मूल श्रोता नहीं हैं। मैं सोचता हूँ कि यह दिलचस्प और हो सकता है कि हमारी जानकारी के लिए सहायतापूर्ण भी होगा कि नए नियम की व्यक्तिगत् पुस्तकों में से अधिकांश की सँख्या पत्रियाँ या चिट्ठियाँ अर्थात् आज की भाषा में ई-मेल हैं, इसलिए जब हम इन पत्रियों को पढ़ते हैं – तो मैं सोचता हूँ आप इसका विस्तार कर सकते हैं, भले ही पूरी बाइबल का नहीं परन्तु निश्चित रूप से पत्रियों का – हम अन्य लोगों को भेजी गई चिट्ठियों को पढ़ रहे हैं। वे हमारे लिए हैं क्योंकि हम कलीसिया से सम्बन्धित हैं, परन्तु वे सबसे पहले मूल दर्शकों को लिखी गई थीं, नए नियम की घटना में, प्रथम सदी के वास्तविक मसीही विश्वासियों को। और इसलिए यदि हम मूल श्रोताओं और बाइबल के मूल लेखकों के द्वारा उन श्रोताओं, जिन को लिखी गई थी, की मूल परिस्थितियों और चिन्ताओं को समझने के लिए कठिन मेहनत करें, तो हमारे पास उस पुस्तक को समझने के लिए ज्यादा अच्छी समझ होगी। और इससे पहले की हम इसे आज की हमारी परिस्थिति में लागू करने की ओर मुड़ें हम इसकी उस मूल समझ को प्राप्त कर पाएंगे।

-डॉ रॉबर्ट के. मेक्ईवान्

अब क्योंकि हमने उन तरीकों जिसमें लेखक, दस्तावेज और श्रोताओं को पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते हुए देख लिया है, इसलिए आइए हम हमारे ध्यान को परस्पर-निर्भरता की ओर केन्द्रित करें।

परस्पर-निर्भरता

हमारे लिए दायित्वपूर्ण तरीके से बाइबल की व्याख्या करने के लिए, यह समझना अति महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक मार्गदर्शक जिनका हमने उल्लेख किया है, वो हमें इनके बारे सूचित करते हैं और अन्यों के द्वारा सूचित किए गए हैं। लेखक के बारे में हमारा ज्ञान हमें उसके दस्तावेज और मूल श्रोताओं को समझने में हमारी सहायता करता है। जिन बातों को हम श्रोताओं के बारे में जानते हैं वे हमें लेखक की मंशा और उसके दस्तावेज को बारीकियों से

समझने में सहायता करती हैं। दस्तावेज के शब्द और व्याकरण हमें लेखक और श्रोताओं के बारे में सूचना देते हैं। इसलिए, व्याख्याकार होने के नाते, हमें इन संसाधनों से ज्यादा से ज्यादा सम्भव मार्गदर्शन को प्राप्त करना चाहिए, ताकि पवित्रशास्त्र का हमारा पठन् उनमें से किसी एक या दो के ऊपर जोर दिए जाने के कारण असन्तुलित और विषम न हो जाए।

लेखक, दस्तावेज और श्रोता अर्थ के मार्गदर्शन के लिए परस्पर-निर्भर हैं। यदि हम उनकी परस्पर-निर्भरता को ध्यान में रखने को अनदेखा कर देते हैं, तो हम बड़ी आसानी से त्रुटि कर सकते हैं।

यदि हम लेखक के ऊपर अत्यधिक जोर देते हैं, तो हम अक्सर जानबूझकर एक भ्रान्ति में गिर जाते हैं। जानबूझकर होने वाला एक भ्रम बहुत ज्यादा इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या सोचते हैं कि हम लेखक और उसके मंशा के बारे में क्या जानते हैं, और जिन बातों को हमने दस्तावेज और श्रोताओं के बारे में सीखा है, उसके मूल्य को कम कर देते हैं।

बाइबिल की व्याख्या में जानबूझकर कर भ्रमित होने के कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए, हम लेखक मंशाओं के बारे में जब उसने लिखा तो वह क्या सोच रहा था, के बारे में अटकल लगाते हुए अनुचित मान्यताओं को निर्मित कर सकते हैं। और हो सकता है कि हम एक लेखक के बारे में गलत अनुमान लगाते हुए युक्तिसंगत सूचनाओं पर अत्यधिक जोर दे सकते हैं कि जिस मूलपाठ की हम व्याख्या कर रहे हैं उसके साथ बहुत यह ज्यादा प्रासंगिक था।

आइए यूहन्ना 3:16 को देखते हुए कुछ सम्भव जानबूझकर उत्पन्न होने वाले भ्रमों को वर्णन करते हैं। हम निश्चित हो सकते हैं कि जब यूहन्ना ने इस आयत को लिखा, तो उसकी मंशा उसके पाठकों के ध्यान को मसीह की मृत्यु में प्रकट हुए परमेश्वर के प्रेम की ओर आकर्षित करना थी। परन्तु हम उन सारे जटिल, मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बारे में सुनिश्चित नहीं हो सकते हैं, जिन्होंने यूहन्ना को इन वचनों को लिखने के लिए प्रेरित किया। पवित्रशास्त्र और विश्वसनीय इतिहास सामान्य रूप से हमें पर्याप्त मात्रा में यूहन्ना के आन्तिरक विचारों के बारे में इतना ज्यादा सुराग नहीं देता है कि हम इस तरह के निष्कर्षों को प्राप्त कर लें। और चाहे हम इन्हें प्राप्त कर भी लें, उसका आन्तिरक विचार हो सकता है कि यूहन्ना 3:16 के अर्थ के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक न हो।

> **वे व्याख्याकार जो मूलपाठ की मंशा और अधिकार को बहुत ज्यादा मूल्य देते हैं, कई बार जानबूझकर किए जाने वाले भ्रान्ति को करने के लिए दोषी पाए गए हैं, जो यह विचार करते हैं कि हम किसी तरह से अटकल लगा सकते हैं कि जो कुछ हमने सोचा वही लेखक वास्तव में बाइबल के मूलपाठ के अर्थ के साथ चाहता था... इसका अर्थ यह नहीं है कि हम यह कहने के लिए सक्षम नहीं है कि लेखक यह कहने के लिए योग्य हैं जो वे चाहते थे कि उनके श्रोता समझें और ऐसा वास्तव में आने वाली सदियों में भी समझने के लिए योग्य होना चाहिए। इसलिए, चाहे वह मेरी पत्नी को संसार के दूसरे सिरे से लिखा हुआ पत्र या ई-मेल ही क्यों न हो, या चाहे वह कोई आज के किसी एक अखबार में कुछ क्यों न लिख रहा हो, या एक लेखक एक आधुनिक पुस्तक को लिख रहा है, सभी लेखक अटकल लगाते हैं कि एक तरीका है जिसके द्वारा वे अपने सन्देश को लाते हैं और उस मूलपाठ के लेखों के द्वारा कि वे कौन हैं, और वे स्वयं को कुछ सीमा तक उस मूलपाठ के द्वारा सम्प्रेषित करते हैं और, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इस सच्चाई के साथ ही, जिसमें हम यह विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र का मूलभूत लेखक एकमात्र मानवीय लेखक नहीं हैं, परन्तु वास्तव में दिव्य लेखक मानवीय लेखकों के साथ मिल कर कार्य कर रहा हैं, और इसलिए, हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा उन मानवीय लेखकों की सहायता करता है कि जिन्होंने सबसे पहले बाइबल को लिखा। परन्तु वह आधुनिक पाठकों की भी इसके पठन् में सहायता करता है ताकि परमेश्वर का मन क्या हो उसके बारे में हम समझ सकें।**
>
> **- डॉ शिमौन विबर्ट**

एक दूसरे तरह की गलती जिसे हम करते हैं, वह दस्तावेज के ऊपर अत्यधिक जोर देने की है। इस तरह की गलती को अक्सर लेखाचित्रीय भ्रान्ति कहा जाता है। शब्द "लेखाचित्र" यूनानी शब्द *ग्राफे* से आता है जिसका अर्थ "लिखने" से है। तद्नुसार, लेखाचित्रीय भ्रान्ति दस्तावेज के ऊपर संदर्भिक बातें जैसे लेखक और श्रोताओं का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रासंगिक बहिष्कार करते हुए स्वयं पर अत्यधिक जोर देती है। यह भ्रान्ति है, या गलती है, क्योंकि वही दस्तावेज जिसने उसे लिखा है और जिसके लिए लिखा गया, के ऊपर निर्भर होते हुए बहुत ज्यादा भिन्न अर्थ दे सकता है। हो सकता है कि हम भ्रान्ति में यह सोचते हुए पड़ जाएँ कि हम किसी एक प्रसंग की केवल उसकी शब्दावली, व्याकरण, और संरचना का उसके लेखक या मूल श्रोताओं के सम्बन्ध के बिना उसका विश्लेषण करके अर्थ को पर्याप्त समझ सकते हैं।

यूहन्ना 3:16 के हमारे उदाहरण से, सोचिए कि उस समय क्या होगा जब हम अपने ध्यान को केवल दस्तावेज के ऊपर ही आधारित करते हैं और यूहन्ना और उसके मूल श्रोताओं को अनदेखा कर देते हैं। हम कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर का पुत्र कौन था? कुल मिला कर, यह आयत उसके बारे में स्पष्ट रूप से पहचान नहीं कराती है। यदि पाठक यह नहीं जानते कि यूहन्ना एक मसीही विश्वासी था और यह कि उसने मसीही विश्वासी श्रोताओं के लिए इसे लिखा, तो वे सभी तरह की गैर जिम्मेदार अटकलों को लगाएंगे।

कनानी देवताओं की पूजा करने वाला एक मूर्तिपूजक अराधक यह सोच सकता है कि "परमेश्वर का पुत्र" बाल देवता था, जो कि कनानी देवता ऐल का पुत्र था।

जो कोई इस सच्चाई से अवगत है कि आदम को लूका 3;38 में "परमेश्वर का पुत्र" कह कर पुकारा गया है, हो सकता है कि गलत निष्कर्ष निकाल ले कि यूहन्ना 3:16 में लिखा हुआ परमेश्वर का पुत्र आदम ही है, या हो सकता है कि यह अर्थ कि आदम और यीशु एक ही व्यक्ति हैं।

हो सकता है कि अन्य पाठक इस तरह के एक और एकलौता या संसार, या अनन्त जीवन की अवधारणा जैसे शब्दों से भ्रम में पड़ जाए। हम कई गलतियाँ कर सकते हैं, जब हम लेखक और श्रोताओं को अनदेखा कर देते हैं।

एक तीसरी तरह की व्याख्यात्मक गलती जिसे हम कर सकते हैं वह श्रोताओं के ऊपर अत्यधिक जोर देने की है। इसे अक्सर एक भावात्मक भ्रान्ति कहते हैं क्योंकि यह बहुत ज्यादा इस बात के ऊपर ध्यान केन्द्रित करती है कि कैसे पवित्रशास्त्र उसके श्रोताओं के ऊपर प्रभाव डालता है। यह भ्रान्ति अक्सर तब हो जाती है जब एक व्याख्याकार मूल श्रोताओं की मानसिकता के बारे में बहुत ज्यादा अटकल अर्थात् अनुमान लगाता है, और लेखक और दस्तावेजों के ऊपर पर्याप्त मात्रा में ध्यान देने में विफल हो जाता है। यह निश्चित तौर पर ध्यान देना युक्तिसंगत है कि पवित्रशास्त्र का उसके मूल श्रोताओं के ऊपर प्रभाव पड़ता है, साथ ही उन बातों के ऊपर जिन्हें हमें श्रोताओं के बारे में विश्वसनीय इतिहास से सीखते हैं। परन्तु भावात्मक भ्रान्ति इससे आगे की ओर मूलपाठ के लिए श्रोताओं की व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के ऊपर अत्यधिक जोर देती हुए चली जाती है और सदैव लगभग पवित्रशास्त्र के आत्मनिष्ठक, और अविश्वसनीय पठन् के परिणाम को उत्पन्न करती है।

उदाहरण के लिए, यूहन्ना 3:16 में, भावात्मक भ्रान्ति हो सकता है कि मूल श्रोताओं की परिस्थितियों और अनन्त जीवन के ऊपर यूहन्ना की शिक्षाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के बारे में बहुत ज्यादा अनुमान लगा लें। हो सकता है कि यह सुझाव दे कि जब यूहन्ना ने जीवन के बारे में बात की है, तो उसने वास्तव में जो कुछ कहा वह उसके मूल श्रोताओं को सताव से पार्थिव रूप में बचाव था, जिसका वे सामना कर रहे थे न कि कोई आत्मिक नवीकरण और वह आशीष जिसका वे अनन्त काल के लिए आनन्द प्राप्त करेंगे। ऐसी व्याख्या इसके श्रोताओं के ऊपर प्रंसग के प्रभाव पर अत्यधिक जोर देती हुई यूहन्ना की व्यापक शिक्षा और स्वयं दस्तावेज के विवरण को अनदेखा कर देगी।

> **उन मूल श्रोताओं जिनके लिए पवित्रशास्त्र की यह पुस्तक इस तरीके से लिखी गई, के महत्व के ऊपर अत्यधिक जोर दिया सम्भव है: सबसे पहले, इसे बहुत ज्यादा विशिष्ट बनाने के द्वारा, विशेष रूप से, यह सोचते हुए कि हम उनके बारे में जो कुछ जानते हैं, उससे ज्यादा जानते हैं। क्योंकि नए नियम की पुस्तकों के साथ – और पुराने नियम की पुस्तकों के साथ सबमें यही सच्चाई है, परन्तु मैं नए नियम के बारे में बोलूँगा – नए नियम की ज्यादात्तर पुस्तकों के श्रोताओं के बारे में हम ज्यादा नहीं जानते हैं जिनके लिए वे लिखी गई थीं। और इसलिए, जब हम उनके श्रोताओं के लिए परिकल्पना करने का प्रयास करते हैं, तो हमारे लिए गलत व्याख्या लगाने की संभावना है क्योंकि हम ऐसे श्रोताओं की कल्पना करते हैं जो कि**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वास्तव में उचित नहीं है। आप इब्रानियों को जानते हैं...जो कि एक पुस्तक है जिसमें मैं विशेषज्ञ हूँ, और सभी तरह के लोग इसके विशेष श्रोताओं के लिए कल्पना करते हैं जिनके लिए यह पुस्तक लिखी गई थी...और सच्चाई तो यह है कि, यह उनकी व्याख्या को तोड़ मोड़ देती है क्योंकि वे उनके विशेष श्रोताओं को नहीं जानते हैं। इसलिए यह जानकारी होना महत्वपूर्ण है कि पुस्तकें पहली सदी में लिखी गई थीं। उस सदी की संस्कृति और भाषा को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह कि यह कैसे लिखी गई थी और ऐसी ही अन्य बातें। परन्तु यह भी महत्वपूर्ण है कि मूल श्रोताओं के लिए एक ऐसे विचार को विकसित न किया जाए जो कि उससे परे चले जाए जिसे हम जानते हैं। क्योंकि सुसमाचारों के लिए, उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि वे कलीसिया में मसीही विश्वासियों के पालन पोषण के लिए लिखे गए थे, परन्तु हम इससे ज्यादा नहीं जानते हैं। और हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इससे ज्यादा न सोचें। यदि हम ऐसे करते हैं, तो हम पवित्रशास्त्र की गलत व्याख्या करेंगे।

- डॉ गैरी कोकरिल

दुर्भाग्य से, जानबूझकर होने वाली भ्रान्ति, लेखाचित्रीय भ्रान्ति और भावनात्मक भ्रान्ति जैसी गलतियाँ आसानी से हो जाती हैं – विशेषकर, जब हमारे पास कुछ मार्गदर्शकों की बहुत ज्यादा सूचनायें होती हैं। और सच्चाई तो यह है कि कभी भी एक मूलपाठ के लेखक या दस्तावेज के बारे में हम ज्यादा नहीं जान सकते हैं। बाइबल की बहुत सी पुस्तकें गुमनाम हैं, और बहुत सी अपने श्रोताओं के बारे में स्पष्ट तौर पर परिचय नहीं देती हैं। और कई बार हम दस्तावेज के बारे में महत्वपूर्ण सूचना की कमी को पाते हैं। हमें सदैव ऐसे संसाधनों तक पहुँच नहीं है जो हमें इसके सारे गुणों को समझने में हमारी सहायता कर सके, जैसे कि पवित्रशास्त्र की मूल भाषा में जिस तरह से बातें कही गई हैं, उनके निहितार्थ का उपयोग। जब हमारी सूचनायें सीमित होती हैं, तो सामान्य तौर पर यह बुद्धिमानी होगी कि हमारी व्याख्या ज्यादा सरल हो। परन्तु फिर भी, जब हम लेखक, दस्तावेज और श्रोताओं से प्राप्त होने वाले मार्गदर्शन की परस्पर-निर्भरता को उचित रूप से ध्यान में रखते हैं, तो जो कुछ भी हम इन मार्गदर्शकों से सीखते हैं, उसमें हमारी व्याख्या को उन्नत करने की क्षमता है।

अभी तक अर्थ की खोज के विषय में हमारे विचार विमर्श में, हमने अर्थ के लिए तीन महत्वपूर्ण मार्गदशर्कों को सम्बोधित किया। इसलिए, अब हम हमारे ध्यान को बाइबल आधारित मूलपाठ के अर्थ के लिए कई तरह के सार के मूल्य पर केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं।

सार

यदि आप एक लम्बे समय से कलीसिया में हैं तो आपने कदाचित् यह सुना होगा कि बाइबल के एक ही मूलपाठ से एक से ज्यादा पास्टर प्रचार करते हैं। और अक्सर सन्देश बहुत ही भिन्न होता है। सच्चाई तो यह है कि, अर्थ का अनर्थ किए बिना एक ही मूलपाठ में से भिन्न सन्देशों को, बहुत ही भिन्न सन्देशों को प्रचार किया जा सकता है। ऐसा कैसे हो सकता है? सरल रूप में कहना, पवित्रशास्त्र की कोई भी मानवीय व्याख्या अपने आप में सम्पूर्ण नहीं है या इसके अर्थ को पूर्ण प्रगट कर सकती हो। यहाँ पर सदैव और अधिक सीखने के लिए बहुत कुछ है। और परिणामस्वरूप, हमें सदैव बाइबल के प्रसंगों के सार अर्थात् संक्षिप्तिकरणों को प्राप्त करने के लिए नए तरीकों को देखना चाहिए ताकि हम जो कुछ उनका अर्थ है, के लिए अपनी समझ को और ज्यादा उन्नत कर सकें।

पवित्रशास्त्र के अर्थ की खोज करने के लिए सबसे उपयोगी तरीका एक प्रसंग के कई सार बनाने में है। इस अध्याय के संदर्भ में, हम शब्द सार का उपयोग निम्न अर्थ को देने के लिए उपयोग करेंगे।

एक प्रसंग का विवरण

सामान्य रूप से एक सार, एक विशेष दृष्टिकोण से या किसी एक विशेष विचारधारा पर जोर देने से जो कि एक प्रसंग में प्रकट होती है, से आता है। क्योंकि प्रत्येक प्रसंग का एक जटिल अर्थ होता है, इसलिए सार हमारे अध्ययन को संकीर्ण बनाने में हमारी सहायता करते हुए, हमें मात्र एक हिस्से पर केन्द्रित रहने की अनुमति देता है कि वह प्रसंग क्या कहना चाहता है।

हम एक सार की विचारधारा का वर्णन एक ऐसे विद्यार्थियों के समूह के बारे में सोचते हुए कर सकते हैं जो कि एक जटिल, नाटकीय खेल को देख रहे हों। प्रस्तुतीकरण के बाद, विद्यार्थियों को खेल के अर्थ के सार के बारे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

में पूछा जाता है। एक विद्यार्थी, खेल का सार पूरी कहानी में पात्रों का निर्माण कैसे होता रहा, का विवरण देते हुए करता है। दूसरा विद्यार्थी घटना को कालानुक्रमिक आदेश में वर्णित करता है। परन्तु अन्य विद्यार्थी ऐसे वर्णन करता है कि कैसे खेल ने आज के दिनों की सांस्कृतिक मूल्यों की आलोचना की थी। और अन्त में, एक विद्यार्थी विवरण देता है कि कैसे सुन्दर मंचन और अर्थपूर्ण भाषा ने उसे व्यक्तिगत् रूप से प्रभावित किया है। ये सभी प्रतिक्रियायें प्रस्तुतीकरण के अर्थ के युक्तिसंगत सार हैं। परन्तु इनमें से कोई भी सार पूरी तरह से खेल के पूरे अर्थ को पकड़ नहीं पाता है। यदि हम खेल के पूरे अर्थ को देख रहे हैं, तो हमें इन सारे और अन्य सारों को भी सम्मिलित करना होगा। परन्तु कई तरह के सारों का होना अत्यन्त उपयोगी है – क्योंकि यह हमें अर्थ के व्यक्तिगत् पहलू के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने के लिए सहायता करता है, और यह हमें भी खेल के पूरे अर्थ को जानने के लिए अधिक से अधिक सहायता करते हुए अनुमति देता है।

और यही बात पवित्रशास्त्र के साथ भी सत्य है। बाइबल के प्रसंग के अर्थ के लिए कई युक्तिसंगत तरीके हो सकते हैं, और ये सार हमें इसके अर्थ के पहलूओं को ज्यादा उत्तम तरीके से समझने में सहायता प्रदान करते हैं। और कई युक्तिसंगत सार को इक्ठ्ठा कर दिए जाने से, यह हमें युक्तिसंगत सारों की अधिक से अधिक निकटता में लाते हैं और प्रसंग के पूरे अर्थ के अति निकट ले आते हैं।

हम तीन मुख्य तथ्यों का पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए कई सारों को प्राप्त करने के लाभों के लिए उदाहरण देंगे। सबसे पहले, हम प्रसंग की जटिलता के ऊपर देखेंगे। दूसरा, हम व्याख्याकार की विशिष्ठता का उल्लेख करेंगे। और तीसरा, हम श्रोताओं की आवश्यकता के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिनके लिए मूलपाठ सारांशित किया गया है। आइए प्रसंग की जटिलता की खोज से आरम्भ करें।

प्रसंग की जटिलता

जैसा कि हमने पहले एक अध्याय में सीखा, पवित्रशास्त्रीय प्रसंगों की जटिलता अधिकतर इस सच्चाई में निहित है कि उनमें वास्तविक अर्थ, या शाब्दिक भावार्थ कई तरह से होता है जैसे कि एक तराशे हुए पत्थर के समान। उनमें ऐसे कोण होते हैं जो कि ऐतिहासिक तथ्यों, धर्म सिद्धान्तों, नैतिक दायित्वों, मुक्ति और युगान्तशास्त्र को प्रगट करते हैं। पवित्रशास्त्र के प्रत्येक मूलपाठ हमारे विचारों, शब्दों, और गतिविधियों के लिए नैतिक निहितार्थों को सम्प्रेषित करता है। प्रत्येक मूलपाठ इतिहास और मुक्ति के बारे में कुछ न कुछ शिक्षा देता है और हमारी सहायता करता है कि हम भविष्य के सम्बन्ध में आशाओं और अपेक्षाओं को निर्मित करें। और इनमें से प्रत्येक बात जिसे एक प्रसंग सम्प्रेषित करता है, को एक सार के लिए आधार के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

वास्तव में, क्योंकि पवित्रशास्त्र के अर्थ बहुआयामी हैं, हम इसे कई विभिन्न तरीकों से सारांशित कर सकते हैं और फिर भी इसके शाब्दिक भावार्थ के साथ सच्चे बने रह सकते हैं। पवित्रशास्त्र की जटिलता यह बतलाती है कि हमारे सार कभी भी पूर्ण नहीं होंगे और यह कि हम सदैव और ज्यादा सार निकाल सकते हैं जो कि दोनों अर्थात् सच्चे और विशेष रहें।

आइए इस विचार की खोज कुछ ऐसे स्थानों को देखते हुए करें जहाँ पर पवित्रशास्त्र के एक संदर्भ में वास्तव में अन्य को सारांशित किया गया है। भजन संहिता 110:1 के इन शब्दों के ऊपर ध्यान दें:

> **मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, "कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।" (भजन संहिता 110:1)।**

नया नियम निरन्तर भजन संहिता 110:1 को उद्धृत करता है। परन्तु प्रत्येक समय यह मूल अर्थ के एक अलग पहलू पर केन्द्रित है। और कोई भी उद्धरण अपने में पूर्णता को नहीं रखे हुए हैं, जो कि अन्य आयतें भजन संहिता के मूल अर्थ के बारे में कहती हो।

उदाहरण के लिए, यीशु ने लूका 20:41-44 का उद्धरण यह दिखाने के लिए किया है कि मसीह को केवल दाऊद के पुत्र होने से ज्यादा होना है।

प्रेरितों के काम 2:32-36 में पतरस ने यह प्रदर्शित किया है कि यीशु दोनों अर्थात् प्रभु और मसीह है क्योंकि वह दाऊद का वारिस है, जो स्वर्गीय सिंहासन पर जा चढ़ा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नया नियम यह भी स्वीकार करता है कि भजन संहिता 110:1 के शब्द दाऊद के प्रभु के लिए बोले गए हैं; इसलिए, नए नियम के बहुत सारे प्रसंग भजन संहिता 110 का संकेत मसीह का पृथ्वी पर राज्य की ओर संकेत करते हैं। इफिसियों 1:20-22, 1 कुरिन्थियों 15:25 और इब्रानियों 10:13 सभी भजन के मूल अर्थ के इस पहलू के सार को जब तक मसीह वापस न आए उसके वर्तमान के शासन के संदर्भ में उपयोग करते हैं। इब्रानियों 1:13 यहाँ तक कि इसे यीशु के उस अधिकार को प्रदर्शित करने के लिए करता है, जो कि स्वर्गदूतों की सेवकाई के ऊपर है।

नए नियम का भजन संहिता 110 के लिए दिया गया प्रत्येक संदर्भ भजन के मूल अर्थ के प्रति विश्वासयोग्य है। परन्तु प्रत्येक उस मूल अर्थ का अधूरा सार है, और प्रत्येक के पास विशेष तरह का बल है। ऐसा इसलिए सम्भव है क्योंकि एक आयत के मूल अर्थ जटिल, बहुआयामी होते हैं।

नए नियम के लेखक पुराने नियम का उपयोग इस तरीके से कर रहे थे, कि जो यहूदी व्याख्यात्मक परम्पराओं में पहले से उपलब्ध मूलपाठों के लिए बहुत सामान्य थे। और कुछ लोग इसे *मिडराशिक* तकनीक कह कर पुकारते हैं। एक सामान्य प्रसंग जो कि मत्ती के सुसमाचार में भ्रमित करने वाला है और मत्ती के पास एक सूत्र है जिसे वह पूर्णता का सूत्र कह कर पुकारता है – "कि यह पूरा हुआ..." और मत्ती 2 में, जहाँ मसीह और उसका परिवार मिस्र की ओर पलायन कर रहा है और फिर मिस्र में से वापस आ रहा है, मत्ती इसके लिए होशे में से उद्धृत करता है और कहता है कि, "मैंने मेरे पुत्र को मिस्र में से बाहर बुलाया।" और अक्सर कई बार, बाइबल के टीकाकारों ने इस प्रसंग को ही उद्धृत किया है और कहा है कि, ठीक है, कि यह जो कुछ होशे ने कहा वास्तव में किस तरीके से उसके अनुरूप है जबकि उसने इन शब्दों को कई हजार साल पहले लिख दिया था? हम क्या देखते हैं, यदि हम मत्ती के प्रथम चार अध्यायों को देखें तो विशेष कर मत्ती यह कह रहा है कि कैसे यीशु वास्तव में इस्राएल का प्रतीक है। यह कि वही आदर्श इस्राएल है; वही परमेश्वर का आदर्श पुत्र है। उसी तरह से जैसे कि इस्राएल को "उसका पुत्र होने के लिए बुलाया गया" जैसा कि हम निर्गमन में पढ़ते हैं, यीशु जंगल में जाता है, उसकी परीक्षा होती है, और वह उस परीक्षा में से बच निकलता है और पुत्रत्व की जाँच में खरा निकलता है। परन्तु इससे पहले अध्याय 2 में, जब वह और उसका परिवार मिस्र की ओर पलायन कर रहा है और मिस्र में से बाहर आ रहा है, परिणामस्वरूप वह सारे इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है जैसे कि मानो वह वहाँ से बाहर आ रहा हो। और यह वह विचार है जिसे बाइबल के लेखक प्रतीकशास्त्र कहते हैं: वह एक नमूना को पूरा कर रहा है, कि इस्राएल मिस्र में से बाहर आ गया था और इसी तरह से वह अर्थात् मसीह मिस्र में से बाहर आ जाता है और हम इससे यह समझते हैं कि वह इस्राएल को प्रस्तुत कर रहा है। और वह नमूना, वह प्रतीकशास्त्र वास्तव में बाहर निकल कर आता है जब हम उन अन्य प्रसंगों के ऊपर देखते हैं जो कि मसीह को विशेष रूप से मत्ती के प्रथम चार अध्यायों में प्रस्तुत करते हैं, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, वह दाऊद का पुत्र है, वही आदर्श इस्राएल है।

- डॉ ग्रेग पेरी

लोग अक्सर परेशानी में पड़ जाते हैं जब वे उस तरीके को देखते हैं जिसमें नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के साहित्य का उपयोग किया है, क्योंकि हम विशेषकर सेमीनरी में यह शिक्षा देते हैं कि, आपको बहुत ही, बहुत ही सावधानी से उन आशाओं का उपयोग करना है जिन्हें पुराने नियम के लेखकों ने उपयोग किया, और इसी तरह की अन्य बातें। सबसे पहले, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम को तीन विभिन्न तरीकों से उपयोग किया: कई बार उन्होंने इसे सीधे ही उद्धृत किया और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने इसे जिस तरीके से हमें इसकी व्याख्या करनी चाहिए उसकी बहुत ही, बहुत ही निकटता से व्याख्या की। अन्य समयों में, उन्होंने इसका उपयोग संकेतात्मक रूप में किया जहाँ पर वे सामान्य रूप से किसी बात की ओर संकेत कर रहे थे जिसे पुराना नियम कह रहा था। वे वास्तव में इसकी व्याख्या नहीं कर रहे थे; वे तो केवल एक विचार को इसमें से ले

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

रहे थे। और तीसरा तरीका जिसमें उन्होंने उपयोग किया वह इसका वर्णन करना था। किसी एक बात का वर्णन करना जिसे वे कह रहे थे, का अर्थ पुराने नियम में से एक उदाहरण में से कुछ विवरण देने से है, और वे वास्तव में संदर्भ के लिए चिन्तित नहीं थे या ऐसी ही कोई बात से, वे तो केवल वर्णनात्मक रूप से इसका उपयोग कर रहे थे। यदि हम यह अनुमान लगाएं कि नए नियम में पुराने नियम का प्रत्येक बार उपयोग किए जाने की मंशा सीधे एक व्याख्यात्मक उद्धरण से है, तो हमें परेशानी का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि पुराने नियम के बहुत से उपयोग वर्णनात्मक या उदाहरणात्मक हैं। मैं सोचता हूँ जब हम यह समझते हैं कि, यदि हम इस तरह की विभिन्नताओं को करेंगे, तो बहुत सी घटनाओं में, समस्याएँ गायब हो जाएंगी।

- डॉ जॉन औसवॉल्ट

सच्चाई तो यह है कि, यही बात पवित्रशास्त्र के प्रत्येक प्रसंग के साथ सत्य है। प्रत्येक मूलपाठ युक्तिसंगत बहुआयामी सारों की ओर मार्गदर्शन करता है। और वे सार जो हमारे लिए अत्यन्त मूल्यवान् हैं, स्थान से स्थान पर, समय-समय पर, और व्यक्ति से व्यक्ति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। पवित्रशास्त्र का प्रत्येक सार समान रूप से मूल्यवान या युक्तिसंगत नहीं होता है। परन्तु बाइबल आधारित प्रसंगों के मूल अर्थ के कई सार होते हैं, जो कि कलीसिया के प्रत्येक युग के लिए विश्वासयोग्य और उपयोगी होते हैं।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि प्रसंग की जटिलता कैसे हमें बहुआयामी सार की ओर मार्गदर्शन करती है, इसलिए आइए हम अपने ध्यान को व्याख्याकार की विशेषता की ओर केन्द्रित करें।

व्याख्याकार की विशिष्टता

पिछले एक अध्याय में, हमने पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए एक अधिकार-संवाद दृष्टिकोण के उपयोग की वकालत की थी। आपको स्मरण होगा कि अधिकार-संवाद प्रतिमान स्वीकार करता है कि विषयनिष्ठक सच्चाई तब तक पवित्रशास्त्र के मूलपाठ में मिलती रहती है जब तक यह पद्धति बाइबल आधारित मानकों का अनुपालन करती है। अधिकार-संवाद प्रतिमान का एक मूल्यवान पहलू यह है कि यह इस सच्चाई को प्रकाशित करता है कि सभी व्याख्याकार बाइबल आधारित लेखों के पास विभिन्न तरह की चिन्ताओं, पूर्वानुमानों, पृष्ठभूमियों और प्रश्नों के साथ आते हैं। हममें से प्रत्येक पवित्रशास्त्र को विभिन्न तरीकों से पढ़ते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को विभिन्न तरीके के वरादन दिए हैं। हम सभों की अच्छाईयाँ और कमजोरियाँ हैं, हम सभी विभिन्न तरीकों से सूचनाओं को अपने विशेष अनुभव और ज्ञान पर आधारित होकर उपयोग करते हैं। परमेश्वर ने उसकी कलीसिया को इसलिए रचा है ताकि इसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की अच्छाईयों से लाभ उठा सकता है।

लोगों के वरदान और पृष्टभूमियाँ उन्हें बाइबल आधारित प्रसंगों को विशिष्ट तरीके से सारांशित करने के लिए मार्गदर्शन देते हैं। उदाहरण के लिए, एक इतिहासकार हो सकता है कि उत्पत्ति 1 के अर्थ को एक कलाकार के अर्थ की तुलना में भिन्न तरीके से सारांशित करेगा। एक इतिहासकार हो सकता है कि इस तरह से विवरण दे जिसमें परमेश्वर ने ज्योति और आकाश, पानी और सूखी भूमि और पौधों और पशुओं की रचना की। परन्तु हो सकता है कि एक कलाकार रात के समय आकाश के तारों की सुन्दरता और खूबियों, और पूरे संसार के पक्षियों और मछलियों के बारे में बात करे। व्याख्याकार की व्यक्तिगत खूबियाँ उनमें से प्रत्येक का मार्गदर्शन कर महत्वपूर्ण परन्तु एक प्रसंग के मूल अर्थ के विभिन्न पहलूओं का पता लगाने में करती है।

उसी समय, दोनों प्रकार के सार व्याख्याकार की कमजोरियों के कारण बाधित भी हो सकते हैं; उनमें से प्रत्येक महत्वपूर्ण सच्चाई को छोड़ सकता है जिसे कि किसी अन्य ने सम्मिलित किया है। उदाहरण के लिए, आइए अनुमान लगाएं कि, हम परमेश्वर के स्वभाव के बारे में समझना चाहते हैं, और इसके लिए हमने उत्पत्ति 1 का चुनाव करके इसे खोजना आरम्भ किया है। यदि हम इतिहासकारों के सारों को पढ़ें, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर एक संगठित योजनाकार है, परन्तु यदि हम उस आनन्द को अनदेखा कर दें जिसे उसने उसकी सृष्टि की रचना करते हुए प्राप्त किया जब उसने उत्पत्ति 1:31 में यह उदघोषणा की कि सृष्टि "बहुत अच्छी" थी। परन्तु फिर भी, यदि हम केवल एक कलाकार के सार के ऊपर ही अपने ध्यान को केन्द्रित करें, तो हम देख सकते हैं कि परमेश्वर एक त्रुटिहीन रचनाकार है, परन्तु हम उसकी मंशा और तरतीब को अन्देखा कर सकते हैं। ये संभावित कमजोरियाँ हैं जो हमें यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

देखने में सहायता करती हैं कि किसी भी सार को अनदेखा मात्र इसलिए नहीं कर दिया जाना चाहिए क्योंकि यह हमारे जैसा नहीं है। बहुत सी घटनाओं में, हम एक प्रसंग के बारे में अन्य लोगों के द्वारा दिए हुए सार से सीख प्राप्त कर सकते हैं।

क्योंकि मसीह की देह में हम सभों के पास खूबियाँ और कमजोरियाँ हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम न केवल पवित्रशास्त्र का अध्ययन स्वयं करें परन्तु हम अन्यों से भी पवित्रशास्त्र के बारे में सीखते हैं उन्होंने इसमें क्या देखा है। मैं इसके लिए कई एक उदाहरणों को सोच सकता हूँ। मैंने नए नियम का बहुत अधिक अध्ययन किया है। मैंने पुराने नियम का अध्ययन किया है और पुराना नियम मसीह के कार्य को उसकी कलीसिया में पूरा करता है, परन्तु मैं बहुत अधिक मात्रा में अपने मित्रों से लाभान्वित हुआ हूँ जिन्होंने अपने विचारों और ध्यान को पुराने नियम के प्रसंगों के ऊपर केन्द्रित किया और इब्रानी भाषा में लिखे इस मूलपाठ, जो कि प्राचीन निकट पूर्व की पृष्टभूमि में लिखा गया, के ऊपर अपनी समझ के लिए इससे ज्ञान को प्राप्त किया है। जब मैं एक मूलपाठ को जो कि पुराने नियम से आता है, को देखता हूँ, जो कि नए नियम में उद्धृत किया गया है और मैं इसके मूल संदर्भ को भी समझना चाहता हूँ, तो मैं इस तरीके से भी लाभ प्राप्त करता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरी अपनी कमजोरियाँ भी हैं, इसलिए नहीं कि मेरे पास शिक्षा की कमी है परन्तु क्योंकि मैं अभी तक पूरी तरह मसीह के स्वरूप के अनुरूप नहीं हो पाया हूँ। और मैं इन लोगों के ज्ञान से समझता हूँ, जो कि मसीह के साथ लम्बे समय तक जीवन को यापन किए हैं। वे पवित्रशास्त्र में उन बातों को देखते हैं। वे उन निहितार्थों को देखते हैं जिन्हें जीवन और उनकी जीवन शैली में किस तरीके से लागू करना है, जिन्हें मैं पूरी तरह से पहचान नहीं सकता हूँ। इसलिए उस दृष्टिकोण से मेरे आत्मिक अपरिपक्वता पूरी परिपक्वता से बहुत कम है। मैं उन भाइयों और बहिनों से अत्यधिक लाभ प्राप्त करता हूँ, जो मसीह के साथ जीवन को यापन किए हुए हैं।

-डॉ डेनिस ई. जॉनसन

परमेश्वर की मंशा यह है कि बाइबल और बाइबल की व्याख्या अन्य विश्वासियों की सहभागिता के संदर्भ में समझी जाए। एक निर्देश जिसे हमने लगभग पैंसठ बार नए नियम में पाया है, केवल एक शब्द का है, वह "एक दूसरे के लिए" है – एक दूसरे को उत्साहित करो और एक दूसरे को निर्मित करो और एक दूसरे का मार्गदर्शन करो और ऐसी ही अन्य बातें। इफिसियों 3:19 में, पौलुस प्रेरित यह कहता है कि केवल जब हम अन्य विश्वासियों के साथ संगति करते हैं, तब ही हम पूरी तरह अन्य सन्तों की लम्बाई और चौड़ाई को और मसीह के प्रेम की गहराई को समझ पाते हैं। इसलिए इसे हम अकेले नहीं कर सकते हैं। हमें ऐसा करने के लिए अन्य विश्वासियों की सहभागिता की आवश्यकता है। और तब अक्सर वे ऐसा अनुभव करेंगे...जैसा मैंने अनुभव किया है जब मैं एक मिश्रित लोगों के समूह में बैठा और बाइबल का अध्ययन किया है, और यह सदैव आश्चर्य की बात है जिसमें अन्य लोगों ने सहज ज्ञान से एक दूसरे को उन्नत करते हैं, जब वे इकट्ठे बाइबल का अध्ययन करते हैं।

-डॉ पी. जे. बॉईस

एक प्रसंग की जटिलता और व्याख्याकार की विशेषता के तरीकों को देख लेने के बाद जिसमें वह बहुआयामी सारों को निर्मित करता है, आइए हम अब श्रोताओं की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित करें।

श्रोताओं की आवश्यकताएँ

जब हम पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ का सार निकालते हैं, तो हम अक्सर इसे इस तरीके से करते हैं जो कि विभिन्न श्रोताओं की आवश्यकताओं के पूर्वानुमान को ध्यान में रख कर होती है। कई बार हम एक प्रसंग का सार वयस्कों को सन्देश देने के लिए निकालते हैं। कई बार हम बाइबल के अध्ययन की तैयारी बच्चों के लिए करते हैं। कई बार हम बाइबल को इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि हम किसी एक विशेष समस्या से मल्लयुद्ध कर रहे होते हैं, या फिर यहाँ तक कि स्वयं की आत्मिक उन्नति करना चाहते हैं। विभिन्न तरह के श्रोताओं की अक्सर विभिन्न तरह की आवश्यकताएँ होती हैं। और इसका अर्थ यह है कि बाइबल को दायित्वपूर्ण और प्रासंगिक तरीके से जीवन में लागू

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

करने के लिए, हमें ऐसे सारांशों को प्राप्त करना जो कि हमारे विशेष श्रोताओं के लिए सहायक हो सकें। एक उदाहरण में, यीशु के यूहन्ना 16:33 के शब्दों के ऊपर ध्यान दें:

> **मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो! मैं ने संसार को जीत लिया है (यूहन्ना 16:33)।**

इस आयत का सार निकालने के लिए कई युक्तिसंगत तरीके हैं। हम एक ऐसे सार को निकाल सकते हैं जो कि शान्ति के ऊपर केन्द्रित हो, या एक ऐसी सच्चाई के ऊपर जिसमें यीशु सच्चाई को हम पर प्रकाशित करता है। परन्तु आइए हम यह मान लें कि हमें एक सार की एक ऐसे श्रोताओं के समूह के ऊपर लागू करने के लिए आवश्यकता है जो कि सताव में है।

सबसे पहले, हमें सताव के कारण के ऊपर ध्यान देने की आवश्यकता है। कुछ मसीही विश्वासी इसलिए सताए जाते हैं क्योंकि वे अविश्वासी राजनैतिक अधिकारियों के कारण सताव को सहन करते हैं। अन्य इसलिए सताए जाते हैं क्योंकि वे गरीबी या प्राकृतिक बीमारियों के कारण सताए जाते हैं। अन्य उनकी स्वयं की मूर्खता के कारण और यहाँ तक कि अपने पापपूर्ण व्यवहार के कारण सताए जाते हैं। और पापों के अन्य कारण भी हो सकते हैं। हमारे अनुभव में बहुत बड़ा अन्तर होने के कारण, कोई भी एक सार यूहन्ना 16:33 की शिक्षा को इन सारे विभिन्न श्रोताओं के ऊपर दायित्वपूर्ण तरीके से लागू नहीं कर सकती है।

उदाहरण के लिए, ऐसे श्रोताओं के समूह के लिए एक प्रसंग का सार जो कि सताव से पीड़ित है, एक सार कुछ इस तरह का दिखाई देगा: उत्साहित हो क्योंकि यीशु अन्ततः आपके सताव को अन्त कर देगा और एक ऐसे संसार को स्थापित करेगा जिसमें आपको फिर दुबारा कभी नहीं सताया जाएगा।

परन्तु वे जो गरीबी या प्राकृतिक आपदा से पीड़ित हैं, में सार कुछ इस तरह का दिखाई देगा: यीशु ने आपके ऊपर दुख को कुछ समय के लिए अनुमति दी है और अन्त में वह आपको इस तरह से आशीषित करेगा कि आपकी हुई हानि की भरपाई करके आशीष देगा जिसे आपने अनुभव किया है।

सामान्य तौर पर, हम सभी इस तथ्य से उत्साहित हो सकते हैं कि यीशु ने संसार को जीत लिया है, और हम सभी सतावों के बीच में शान्ति की आशा को प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु क्योंकि सभों ने विभिन्न तरह की परेशानियों से दुख को उठाया है, इसलिए हमें इस प्रसंग की जटिल शिक्षा को विभिन्न तरीकों में इस तरह से लागू करना है जो कि विभिन्न श्रेणी के श्रोताओं की आवश्यकता को पूरा करें।

और फिर सांस्कृतिक विभिन्नतायें भी हैं, जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए। प्रत्येक संस्कृति का एक भिन्न इतिहास, भिन्न सामाजिक ढाँचा, भिन्न प्रतिस्पर्धा करते हुए धार्मिक दृष्टिकोण, और भिन्न शक्तियाँ और कमजोरियाँ होती हैं। बाइबल को सबसे ज्यादा सहायतापूर्ण तरीके से जीवन में लागू करने के लिए, हमें पवित्रशास्त्र के उन सारों को प्राप्त करना होगा जो कि विशेष लोगों के समूहों के उनकी विशेष परिस्थितियों में उनकी आवश्कताओं को पूरा करें।

> **पासबानी सेवकाई का एक सौभाग्य यह है कि इसमें बाइबल की शिक्षा और सुसमाचार की उदघोषणा विभिन्न श्रेणी के श्रोताओं को की जाती है – ऐसे लोग जो कि अच्छी तरह से शिक्षित हैं, ऐसे लोग जो कि बिल्कुल भी शिक्षित नहीं है, ऐसे लोग जो कि वयस्क हैं, ऐसे लोग जो कि वृद्ध हैं, विभिन्न तरह की कार्य परिस्थितियों में से आए हुए लोग होते हैं। परन्तु यह एक बहुत ज्यादा परिश्रम वाला कार्य है क्योंकि यह वास्तव में एक से ऐसी मांग करता है जिसमें उसके पास उन लोगों को समझने की समझ होनी चाहिए जिन्हें वह परमेश्वर का वचन दे रहा है। और मैंने देखा है कि दो बातें इस क्षेत्र में बहुत ही ज्यादा सहायक हैं: सबसे पहले, मेरी कलीसिया में लोगों से केवल यह पूछने के द्वारा कि, "क्या स्पष्ट हो गया? क्या आपको यह समझ में आ गया है? मुझे बतायें। "इस हाल ही के सन्देश से आप क्या सीख रहे हैं?" और बस केवल हर समय लोगों को बोलते नहीं रहना है परन्तु लोगों को परमेश्वर के वचन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को पूछना है। दूसरी बात यह है कि जिसे मैंने बहुत ज्यादा सहायता वाली पाया है कि सुसमाचार की शिक्षा निरन्तर जवान बच्चों को देना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि, कई बार पासबानी**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सेवकाई में, मैंने एक ही सन्देश का प्रचार किया जिस पर मैंने थोड़े शब्दों में प्रोढ़ों की सभा में, जवान बच्चों की तुलना में शिक्षा दी थी, और इस तरह से यह एक बड़ा अच्छा तरीका है जिससे एक पास्टर सरलता के वरदान को विकसित कर सकता है। और हमें सदैव सरल और स्पष्ट रहने का प्रयास करना चाहिए जब हम सुसमाचार में से कुछ महत्वपूर्ण बात को सम्प्रेषित कर रहे होते हैं।

-डॉ फिलिप्प रेयकेन

यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम ऐसे सन्देश को अपनाएं ताकि लोग इसे सुन सकें। ऐसा करने के लिए एक तरीका दाहिने-और बाएँ- दिमाग वाले लोगों की शब्दावली में व्यक्त करना है। ऐसा कहिए कि, बाएँ-दिमाग से सोचने वाले लोग बहुत ज्यादा विश्लेषणात्मक होते हैं, वे तथ्यों के साथ समझना चाहते हैं। दाहिने-दिमाग से सोचने वाले लोग बहुत ज्यादा कहानियों और प्रदर्शनों और उदाहरणों पर ध्यान देते हैं। और मैं इन दोनों बातों के बीच में रहने का प्रयास करता हूँ, इसलिए मुझे दोनों ही की आवश्यकता है। और यह उस संस्कृति के ऊपर भी निर्भर करता है जहाँ पर आप जाते हैं क्योंकि यहाँ इस संसार में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ पर बहुत ही ज्यादा बाएँ-दिमाग से सोचने वाले लोग हैं और कुछ लोग ऐसे हैं जो कि बहुत ही ज्यादा दाहिने-दिमाग से सोचने वाले होते हैं, और यह अच्छा है कि इन दोनों स्थानों के लोगो को अपनाया जाए। यीशु के समय में, यह जानकारी बहुत ही ज्यादा रूचिकर है कि वह आत्मिक सच्चाइयों को अन्य पवित्रशास्त्रों, अन्य अनुभवों के साथ सहसम्बन्धित करने की मंशा रखता था: जैसे कि हवा में रहने वाले पक्षियों को देखो; यह कुछ ऐसा है जैसे कि मानो एक सामरी की कहानी के बारे में हो जो कि सड़क पर जा रहा था। उसने ऐसा हर समय किया...और मैं सोचता हूँ कि उसने स्वयं को बहुत अच्छी तरह से विभिन्न श्रोताओं दोनों अर्थात् दाहिने-और-बाएँ दिमाग से सोचने वालों की तुरन्त आवश्यकता के अनुकूल बना लिया था।

-डॉ मॉट फ्राईडमैन

जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हमें सदैव दोनों अर्थात् एक प्रसंग के मूल अर्थ और हमारे श्रोताओं की समकालीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। कई तरह से, पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल कुल मिलाकर मूल अर्थ और हमारे समकालीन श्रोताओं के बीच में दूरी को पाटना है, ताकि हम बाइबल आधारित मूलपाठ के पूरे मूल्य के लाभ को प्राप्त कर सकें। हममें से कोई भी इसे पूरी सिद्धता के साथ नहीं कर सकता है। परन्तु हम पवित्र आत्मा पर भरोसा कर सकते हैं कि वह हमें बाइबल आधारित सारों के लिए मार्गदर्शन दें जिससे हम हमारी कलीसिया की बहुमूल्य तरीके से सेवा कर सकें।

सारांश

अर्थ की खोज करने के ऊपर इस अध्याय में: हमने दो मुख्य विचारों के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित किया: अर्थ के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शक हम लेखक, दस्तावेज और पवित्रशास्त्र के श्रोताओं में पाते हैं; और हम पवित्रशास्त्र के बहुआयामी सारों को निर्मित कर सकते हैं।

हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि कई बार पवित्रशास्त्र को समझना अत्यन्त कठिन है। परन्तु शुभ सन्देश यह है कि परमेश्वर ने हमें उसके वचन के मूल अर्थ को खोजने के लिए विभिन्न तरीके दिए हैं। उसने हमें स्वयं पवित्रशास्त्र के दस्तावेज दिए हैं, और इन दस्तावेजों में व्याकरणीय और साहित्य संदर्भ जिसकी हमें आवश्यकता है मिलते हैं। और इसी के साथ उसने हमें पवित्रशास्त्र के लेखकों और मूल श्रोताओं के बारे में सूचनाओं को एकत्र करने के लिए तरीके प्रदान किए हैं। और इसके अलावा, पवित्रशास्त्र के प्रत्येक हिस्से का मूल अर्थ इतना ज़्यादा समृद्ध है कि हम इससे हमारे प्रतिदिन के जीवन के लिए अन्तर्दृष्टियों या सहज बोधों को प्राप्त कर सकते हैं। जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तब यदि हम इन बातों को अपने ध्यान में रखेंगे, तो हम पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ की अधिक से अधिक खोज को करने में सक्षम हो जाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम